हेमराज बंसल

बम भौले

अमरनाथ यात्रा 2006

PDF Developed by GB LABS

बम भोले
अमरनाथ यात्रा 2006
प्रस्थान

सावन का महिना आते ही भगवान शिव अपने भक्तों को दर्शनार्थ बुलाना शुरु कर देते हैं। मैं पूर्व में तीन बार अपनी मित्र मंडली के साथ श्री अमरनाथ जाकर बाबा के दर्शन कर आया था। स्वाभाविक है, घर में यात्रा का गुणगान होता रहता है। गतवर्ष मां वैष्णवदेवी दर्शन करने गई थी तो वहां उसकी मुलाकात अमरनाथ यात्रा कर लौटे अज्ञात बुजुर्ग दंपत्ती से हुई थी। उन्होंने मां को प्रेरित किया तथा मां ने उसके साथ गये मेरे छोटे भाई दीनू से 'अब यहां तक आ गये तो अमरनाथजी भी हो आते हैं', कहा था। दीनू स्वयं पूर्व में दो बार अमरनाथजी हो आया था। वह वहां की समस्याओं से वाकिफ था। उस समय वे लोग ऐसी तैयारी से नहीं गये थे अतः दीनू तत्काल मां की इच्छा पूरी नहीं कर सका था। मैंने बारां आने के बाद जब मां की इच्छा जानी तो इस साल मां व पत्नी तथा हमारे सामने रहनेवाले मेरे भाई साहब जानकीलालजी व उनकी पत्नी के साथ अमरनाथजी जाने का कार्यक्रम बना लिया। भाई सा. की परिवार में इतनी प्रतिष्ठा है कि जिस भी रिश्तेदार ने सुना वही उनके साथ जाने को तैयार। नतीजतन हमारा यात्री दल बढ़ता ही चला गया। शुरु में मैंने मात्र पांच टिकट करवाये थे। मैं हेमराज बंसल, मेरे साथ मेरी मां सूरजदेवी व पत्नी कृष्णा, तथा जानकीलालजी के साथ उनकी पत्नी कमलादेवी। बाद में जगदीश जी खंडेलवाल बपावर वाले भी हमारे साथ जुड़े। इसके बाद यात्रा में हमारे साथ जुड़नेवाले सारे सदस्य जानकीलालजी के रिश्तेदार थे। मंडीवाली आशा भाभी पत्नी हरिमोहन बंसल हमारे विरोध के बावजूद नहीं मानी। मैं इतनी महिलाओं को साथ ले जाने में घबरा रहा था। बाद में इकलेरा से जानकीलालजी का सत्रह वर्षिय नाती अंशुल जैन पुत्र श्री विमल जी जैन भी जाने को तैयार हो गया तो मुझे बहुत हिम्मत मिली। कोटा से जानकीलालजी के बहनोई श्री कन्हैयालालजी जैन व बहिन विद्यादेवी उर्फ कलावती उनके बेटे मुकेश, भूपेन्द्र (पत्नी व दो बच्चों सहित), सांगोद वाली बेटी लाड व कुंवर सा. (तीन बच्चों सहित), साथ ही रामगंजमंडी से रिंकू (जानकीलालजी का भानजा) ने भी टिकट करा लिये। जगदीशजी खंडेलवाल की पत्नी संतोष हमें विदा करने कोटा प्लेटफार्म पर आई थी। भोले ने उन्हें भी बिना किसी तैयारी के बुला लिया। जगदीशजी ने जम्मु में रात दस बजे पत्नी के लिये कपड़े आदि खरीदे।

बारां से रवाना हो योजनानुसार 19 जुलाई 2006 बुधवार शाम रेलगाड़ी से कोटा स्टेशन पर उतरे। कोटा से हमारे साथ यात्रा जा रहे अन्य साथी भी हमें प्लेटफार्म पर ही मिल गये। हमारा अम. रनाथ यात्रियों का दल 9 पुरुषों, 7 महिलाओं तथा 5 बच्चों सहित 22 सदस्यीय हो गया। हमें ट्रेन पर विदा करने आने वालों में ब्याई जी महावीरजी जैन व कुंवर सा. महेन्द्रजी भी थे। कोटा से सही समय पर चली जम्मुतवी सुपरफास्ट गाड़ी जम्मू अपने निर्धारित समय से दो घंटा देरी से 20–7–06 गुरुवार सायं 5 बजे पहुंची। इतने बड़े दल के लिये बहुत मारे–मारे फिरने पर भी होटल नहीं ढूंढ पाये और हार कर वैष्णव भवन में चौथी मंजिल पर एक चौबीस पलंग वाला हॉल लिया। भोजन पेयजल तल मंजिल पर होने के कारण हमारी आधी अमरनाथ यात्रा तो यहां चढ़ने उतरने में ही हो गई।

जम्मु से पहलगांव जाने के लिये हमने 6300 रु. में मिनीबस मेटाडोर की। हम 21–7–06 शुक्रवार सुबह जम्मु से रवाना हुये। एक घंटा मिडवे पर नाश्ता करने में लगाया। कुद से पूर्व पानी पीने तथा बाल ककड़ी, भुट्टे आदि खाने में भी एक घंटा लगा। पत्नीटॉप में नाग मंदिर दिखाने के लिये हमने बस वाले को 300 रु. अतिरिक्त दिये। नाग मंदिर जाने के लिये घाटी में बहुत सारा पैदल चलना पड़ा। घाटी का सौन्दर्य देख सभी अभिभूत हो गये। पत्नीटॉप पहाड़ के माथे पर बसा है, यहां विशाल वृक्ष हैं। अब इस स्थान पर बहुत सारे होटल बन गये हैं। बस की यात्रा में मेरी मां व पत्नी को छोड़ सभी महिलाओं को उल्टियां हुई। मेरी मां सहित तीन महिलायें एकादशी उपवास के कारण कुछ नहीं खा रही थी। ड्राइवर ने कमीशनबाजी के चक्कर में हमें रामबन लंगर में खाना नहीं खाने दिया और शाम पांच बजे बनिहाल में एक पंजाबी ढाबे पर भोजन के लिये बस रोकी। हमने ढाबे पर शीतल पेय तथा पुलाव लिया। हमें देरी

करने का परिणाम भुगतना पड़ा और हमारी बस को काजीगुंडा एवं खन्नाबल के बीच मीरबाजार नामक स्थान पर भारतीय खाद्य निगम के गोदाम में बनाये अस्थाई शिविर में रोक दिया गया। यहां अम्बाला के लोगों द्वारा लगाये श्री अमरनाथ सेवा भंडारा द्वारा अच्छा खाना दिया गया। यहां अस्थाई शौचालय तथा स्नानघरों की व्यवस्था की गई है। ओढ़ने बिछाने के लिये कंबल परिचय पत्र दिखाने पर दिये गये। ये सब व्यवस्थायें बिल्कुल मुफ्त थी। अतिरिक्त कंबल देने के लिये यहां का कर्मचारी पांच रु. प्रति कंबल रिश्वत ले रहा था। 'रात में बहुत सर्दी गिरेगी' ऐसा कह कर वह यात्रियों को डराकर पैसे कमा रहा था। यहां मेरा मोबाइल बंद हो गया। हमें बात करने के लिये फोन का पैसा देना पड़ा। शिविर में घूम रहा एक विदेशी नस्ल का संभवतः जासूसी कुत्ता बहुत देर तक सबका ध्यान आकर्षित करता रहा। हमारी महिलाओं ने कुत्ते के बारे में बड़ी दिलचस्प चर्चाऐं की। रात सोने की ठीक व्यवस्था के बावजूद अच्छी नींद नहीं आई। बहुत देर तक तो भक्ति संगीत चला फिर मच्छरों ने कान में गुनगुनाया। इस गोदाम में पांच सात सौ यात्री तो होंगे ही।

ता. 22–7–06 शनिवार प्रातः नौ बजे यहां से पहलगांव के लिये रवाना होना है। सभी यात्री स्न. ानादि से निवृत्त हुये। लंगर वालों ने खीर, पुड़ी सब्जी व चाय; नाश्ते में दी। पहलगांव पहुंचने से पूर्व नुनवान कैम्प में गाड़ी, सामान तथा सवारियों की गहन जांच पड़ताल हुई। मैं नुनवान कैम्प में रुकना चाहता था पर हमारी युवा ब्रिगेड गाड़ी को पहलगांव बस स्टैण्ड पर ले आई। सारे यात्रियों मैं अकेला ही अमरनाथ यात्रा का अनुभवी था पर बहुमत ने मेरी एक न चलने दी। मैने कुछ देर आराम करने, यात्रा रजिस्ट्रेशन कराने, फालतू सामान कहीं जमा करवाने जैसे सुझाव दिये पर सबको यहां आकर जल्दी लग रही थी। रुक गये तो एक दिन खराब हो जायेगा। जल्दबाजी में बस स्टैण्ड की एक दुकान से कुछ जोड़ी जूतों की खरीददारी की गई। फिर दो टाटासूमो 500 रु. प्रत्येक में कर एक बजे दोपहर चंदनबाड़ी पहुंचे। कड़ी सुरक्षा जांच के बाद बेस कैम्प में प्रवेश कर पहले लंगर पर ही डेरा डाल दिया। यहां पता लगा कि यात्री बहुत कम आ रहे हैं। पंजीयन की जरुरत नहीं है। सामान छोड़ने का कोई क्लॉक रुम नहीं है। कमरा लेंगें या साथ रखेंगें तो सामानों की कीमत से ज्यादा भाड़ा पड़ जायेगा। लंगर वालों को सुर क्षाकर्मियों ने कोई भी सामान रखने से सख्ती से मना किया हुआ है। ऐसे में मेरी लिखी 'आतंकवाद को चुनौती, अमरनाथ यात्रा 1994' पुस्तक काम आई। लंगरवालों को पुस्तक भेंट करते ही उनका व्यवहार नर्म पड़ गया और उनकी शर्तों पर हम वहां भगवान के मंदिर के तख्ते के नीचे असुरक्षित सामान छोड़ कर जा सके। सामानों की लंगरवालों की कोई जवाबदारी नहीं थी। सामानों में नगदी नहीं रखनी थी। मेरे से मेरा नाम पता तथा इस आशय की बात लिखवाकर ले ली गई।

जॉजबल

मैं पूर्व अनुभवों के हिसाब से अब यात्रा पर नहीं निकलना चाहता था। हम सब पैदल यात्रा का प्रण लेकर चले थे। सिर्फ मुझे पता है कि रास्ता कितना कठिन है। किसी ने मेरी बात नहीं सुनी। हमने दोपहर डेढ बजे करीब चंदनबाड़ी से शेषनाग के लिये पैदल यात्रा शुरु कर दी। यात्रा से पूर्व हम सबने लंगर में भरपेट दाल रोटी खा ली थी। खासकर मां को भरपेट खाना खिलाया क्योंकि उसके कल एकादशी थी और आज प्रदोष का व्रत है। आगे यह खाना भी हमारे लिये दुःखदायी बन गया।

चंदनबाड़ी से सिर्फ दो बजे तक ही यात्रा पर निकलने की अनुमति है। कारण भी है इसके बाद जाने वाले यात्री का ठिकाने तक पहुंचना मुश्किल होता है। हम बहुत विलंब से चले हैं, पैदल समय पर शेषनाग पहुंचना कठिन जान मैने सबको पिस्सूटॉप घोड़ों से चढ़ने का तथा स्वतंत्रतापूर्वक चल कर जल्द से जल्द मुकाम पर पहुंचने का सुझाव दिया। मैने पत्नी के साथ सबसे बाद में लंगर छोड़ा। पचास कदम आगे ही दूसरे लंगर पर मां, जानकीलालजी तथा भाभीजी कुर्सियों पर बैठ आराम कर रहे थे। पता लगा मां ने रुकवाया है। भोजन करते ही चला नहीं जा रहा। मैं भी वहीं रुक गया और धूप में कपड़े सुखाने लगा। यहां ज्यादा ठहरना संभव नहीं था। गेट ऐन वक्त पर ही पार किया। हम बाईस यात्री दल में यहां दो उपदल 11–11 सदस्यों के हो गये। 11 अपेक्षाकृत युवा सदस्य आगे निकल गये और सात सदस्य हमारा इंतजार करते मिले। गेट पार करने के तुरंत बाद 70 रु. प्रति घोड़े में पिस्सू टॉप के लिये सभी

को घोड़ों पर बिठा दिया। पैदल यात्रा की भावना को अस्त होते दिन का हवाला देकर दबाना पड़ा। आगे हमें हमारे युवा सदस्य जाते मिले। उनमें से भी कई ने घोड़े कर लिये।

पिस्सूटॉप के शानदार लंगरों में ज्यादा समय खराब नहीं किया और आगे पैदल यात्रा पर निकल पड़े। जल्द ही सबको अपनी क्षमताओं का पता चल गया। मां व मेरी पत्नी से भी नहीं चला जा रहा था। रास्ते में बहुत प्रयास कर मां के लिये ज्यादा पैसे दे कर जॉजबल तक घोड़ा किया। घोड़ेवाले मजबूर यात्री को देखकर बहुत मुंह फाड़ते हैं। हम आध घंटे बाद जॉजबल पहुंचे तो पहले लंगर पर मां दो कुर्सियों पर पसरी थी। मां की हालत बहुत खराब थी। मेरे से कहने लगी,

'घोड़ा शेषनाग तक का ही कर लेता न।''

मैंने समझाया, 'यहां से कोई डेढ किमी आगे तक तो सभी को पैदल ही जाना पड़ता है।'

जॉजबल से नागाकोठी संकरा रास्ता, विकट चढ़ाई, घोड़ों को आने जाने की अनुमति नहीं है। अब मां इस रास्ते को कैसे पार करेगी? मैने लंगर वाले से पूछा तो उसने झट मनाकर दिया।

'यहां यात्रियों को रुकने की अनुमति नहीं है।'

यहां जॉजबल में चार पांच लंगर हैं। आगे के लंगर पर बैठे युवा कार्यकर्ता को मैंने अपनी समस्या विस्तार से लगभग रोते हुये बताई तो उसने रात में हमें लंगर में ठहराना स्वीकार कर लिया। मैं तुरंत जाकर मां को हाथ पकड़ लंगर वाले द्वारा बताये तंबू की ओर लाने लगा। रास्ते में एक मिलेट्री अफसर कुर्सी पर बैठे सिगरेट पी रहे थे। उन्होंने मुझे रोका और कहा कि हम यहां नहीं रुक सकते। मैंने मां की तबियत का हवाला दिया तब भी वह नहीं पसीजा तो मुझे गुस्सा सा आ गया।

'मैं नहीं जा सकता आगे, आप गोली ही तो मारेंगें न, मार देना हम तीनों को। नहीं घुसने दोगे तंबू में तो हम यहीं सड़क पर सो जायेंगे। भिजवा देना सुबह हमारी लाशों को हमारे गांव।' ज्यादा जोर से बोलने पर मेरी आंखो से आंसू आ गये तब जाकर वह अफसर पिघला।

'अरे तुम तो रोने लगे। तेरा मतलब तो यह था कि पहले तुम मां को ले जाकर डाक्टर को दि खाओ। वे रुकने की कहें तो रुक जाना। यहां सोने से तो तबियत ठीक नहीं होगी न।'

'डाक्टर के पास तो इसे ले ही जाना है पर वहां तक जाने लायक तो यह हो जाये। कुछ देर कंबल ओढ़कर सोने से इसे गर्मी आ जायेगी फिर मैं इसे डाक्टर को दिखाकर दवा दिलवा ही दूंगा।'

यह कहते हुये मैं तंबू की ओर बढ़ गया। फौजी अफसर समझ गया अब कुछ कहने से कोई फायदा नहीं है। तंबू में तिरपाल बिछा था तथा एक कोने पर कंबलों का ढेर लगा था। मैंने दो कंबल बिछा तथा दो कंबल उढ़ाकर मां को सुला दिया। पास ही एक कंबल और बिछाकर पत्नी तथा मेरे लिये बैठने की व्यवस्था कर ली तथा बैगों का सामान फैला लिया। आज मेरा आगे यात्रा पर जाना संभव था ही नहीं। मेरे साथ चल रहे आठ साथियों को मैंने मेरी चिंता छोड़ जल्द से जल्द शेषनाग पहुंचने का निवेदन किया। दल के बाकी 11 युवा साथी आगे जा ही चुके थे।

'भगवान ने चाहा तो हम आपको कल घोड़ों से चलकर सीधे पंचतरणी मिल जायेंगें।'

यह लंगर श्री बर्फानी सेवा दल, कमेटी बाजार, होशियारपुर, पंजाब वालों का है। कुछ देर आराम करने के बाद मैं सेवादारजी के पास जा बतियाने लगा।

'फौजी भाई इतने नाराज क्यों हुये?'

'आप उनसे पूछे बिना ही जाने लगे इससे शायद उन्हें हेठी महसूस हुई।'

'पर मैंने आप से पूछ लिया था न। और आप कहते तो मैं उनसे भी पूछ लेता। एक यात्री को यहां की व्यवस्थाओं के बारे में क्या पता होता है?'

'मैंने आपको इशारा किया था पर आप समझ नहीं पाये।'

बातचीत के बाद सेवादार जी के प्रबल आग्रह पर मैंने चाय का गिलास लिया और तंबू में आकर मां को बता–बता कर चाय पी।

'यहां भोलेनाथ की यात्रा पर कोई नियम कानून नहीं चलते हैं। व्रत उपवास भी सब घर पर छोड़कर आना चाहिये।'

मेरे प्रबल आग्रह पर मां ने भी चाय पी ली और अपना एक नियम तोड़ा। कुछ जान आने पर हम कोई दो सौ कदम दूर स्थित चिकित्सा शिविर में पहुंचे। मैंने डाक्टर के यहां अपना ज्ञान बघारते हुये मां की नब्ज, बी.पी. आदि जांचने की बात की तो डाक्टर सा. ने मुझे डांट दिया।

'हम दे रहे वो दवा खिलाओ और रात यहीं रुक जाओ।'

मुझे रात में जॉजबल में रुकने की इजाजत मिल गई पर रात भर यह पर्ची किसी को बताने की नौबत नहीं आई। मां को गोलियां खिलाकर सुला दिया। धीरे–धीरे उसकी तबियत ठीक हुई। अंधेरा होते ही हमें लगा कि हम चंदनबाड़ी में जरुरत का कई सामान छोड़ आये हैं। यहां हमारे पास सबसे महत्वपूर्ण चीज टॉर्च तथा साबुन ही नहीं है।

मैं लंगर में थोड़ी देर भी शांति से नहीं बैठा। वहां के कार्यकर्ता पत्थर उठा–उठा कर चबूतरा बना रहे थे। मैंने भी वहां कुछ देर बेलदारी की। लंगर इंचार्ज गुप्ताजी मेरी जाति के ही निकल आये। यदि मैं मेरी पुस्तकें यहां ले आता तो और भी अच्छा रहता। रात में यहां यात्रियों के लिये खाना नहीं बनाया जाता पर हम लंगर में रुके यात्रियों के लिये दाल चावल रोटी बनी। यहां एक बात और पता लगी। शाम 6 बजे बाद यहां से यात्रा पर आगे जाने की अनुमति नहीं है। इसके बाद आये सभी यात्रियों को यहां जॉजबल में तंबुओं में ही सुलाया गया। रात मैंने तथा मेरी पत्नी ने लंगरवालों द्वारा आग्रह कर खिलाई दाल रोटी खाई। मां के व्रत को मैं नहीं तुड़वा सका। रात नौ बजे हुई भालेशंकर की आरती और कीर्तन में मैंने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। मेरे पास काम कुछ था ही नहीं और थकान भी कहां से होती, पैदल चले ही कितने से हैं?

यहां रात दस बजे तक जर्नेटर चला कर रोशनी की जाती है। हमारे तंबू में भी एक जीरो पावर बल्ब लगा है। इसके बाद क्या होगा? मेरे पास टॉर्च नहीं है। मुझे बहुत चिंता रही। पूर्व में लंगर के माइक से महिलाओं और पुरुषों को अलग–अलग तंबुओं में सोने का फरमान जारी किया गया। बाद में हमारे जनाने तंबू में मात्र दो महिलायें ही और आई। मैं अपने परिजनों के साथ उसी तंबू में सोता रहा। यहां कंबलों की तो कोई कमी है ही नहीं। रात दस बजे एक व्यक्ति ने लंगर अंदर से बांधकर सोने तथा रात में टॉर्च का उजाला न करने का आदेश सुनाया। यह आधार शिविर सुरक्षाबलों के सख्त पहरे में है और वे टॉर्च का उजाला देखकर गोली मार सकते हैं। यहां रात में सर्च लाइट घूमती रहती है।

मेरे मन में रातभर विभिन्न दुश्चिंतायें डेरा डाले रही। छोटे भाई हरि ने बारां में ही मुझ से कहा था, 'मां ऊंचाई पर नहीं जा पायेगी। इसे बी.पी. या हार्ट की समस्या हो सकती है।' मेरी चिंताओं का कोई पार नहीं था। रात में न जाने कब मां की सुगबुगाहट सुन मैंने उसे आवाज लगाई।

'क्या हुआ मां।'

'मुझे पेशाब करने जाना है।'

ओह! अमावस्या के दो दिन पूर्व की काली रात। धुप्प अंधेरा। मैंने टटोलकर तंबू के बंध खोलने का प्रयास किया पर असफल रहा। तभी मुझे अपनी जेब में रखा मोबाइल याद आया। यहां नेटवर्क नहीं होने से बातचीत तो नहीं हो पा रही पर टॉर्च का काम तो करेगा ही। टटोल कर मोबाइल का लॉक खोलने में भी बहुत समय लगा। पर आखिर उजाला हुआ और मैं तंबू खोलने में सफल हो पाया। बाद में मैंने तंबू को अंदर से बांधा ही नहीं। हम प्रातः साढ़े चार बजे करीब उठे तब भी मोबाइल का उजाला काम आया।

मां से बिछोह

तारीख 23–7–06 प्रातःकाल– मेरी रात भर की चिंता का समाधान मेरी मां ने सुबह उठते ही कर दिया। आखिर मां का पुत्र के प्रति अगाध स्नेह जो होता है। बोली,

'बेटा तुम दोनों दर्शन कर आओ। मेरे तो चक्कर कम नहीं हो रहे। यहां की ठंड या आक्सीजन की कमी शायद मेरे से सहन नहीं हो रही। यहीं यह हाल है तो ओर ऊपर जाकर क्या होगा? मेरे को कुछ हो गया तो आप सब लोगों की भी यात्रा रह जायेगी। सब परेशान हो जावोगे। अब मेरे को तो भगवान बुलाना नहीं चाहता।'

मां की वाणी में आग्रह व आज्ञा दोनों थे। मैं असमंजस में था, अब मुझे एक नया रास्ता भी दिखाई देने लगा। मां की तबियत देखनी है, मां को कहीं छोड़ने की व्यवस्था करनी है या मां को जॉजबल से नागाकोठी तक घोड़ों से ले जाने की विशेष अनुमति लेनी है। मेरे आगे जा चुके दल के लोगों के प्रति भी मैं चिंतित था। वे मुझे पंचतरणी में ढूंढेंगे। मुझे पता लगा कि मिलेट्री अफसर यहां दस बजे आते हैं। वे चाहे तो प्रतिबंधित रास्ते पर घोड़े ले जाने की इजाजत दे सकते हैं। लंगर इंचार्ज गुप्ताजी प्रातः आठ बजे सो कर उठे। वे तीन दिन मां को लंगर में रखने और पूरी सेवा अपनी मां मानकर करने को तैयार थे। मैने मां से पुनः आगे चलने के लिये बात की पर मां भी उसी भय से ग्रस्त थी जो हरि ने बारां में पैदा कर दिया था,

'आगे सर्दी या ऊंचाई से और तबियत बिगड़ सकती है। बेटा तुम दर्शन कर आओ।'

भोलेनाथ का नाम ले, सजल नैत्रों से मां से विदा ले, एक बार पुनः सभी लंगर सेवादारों से मां का ध्यान रखने का आग्रह कर मैं पत्नी के साथ पद्यात्रा पर रवाना हुआ।

चिकित्सा तंबू आते ही पत्नी ने बताया कि उसे पतले दस्त हो रहे हैं। तुरंत ही डाक्टर ने चार कैप्सूल दे दिये। ये दवा तो मेरे पास भी है। मेरा सोच था डाक्टर सा. कुछ देखेगें पर दोनों बार ही डाक्टर ने बिना जांच किये लक्षणों के आधार पर दवा दे दी।

डेढ़ किमी पैदल यात्रा भी पत्नी कठिनाई से पूरी कर पाई। रास्ते में हमें पालकीवाले मिले। इस रास्ते को पार करने के लिये पालकी की सुविधा उपलब्ध है। पहले मेरे को यह बात पता नहीं थी। पुनः मां को लाने का ख्याल आया पर वही डर पुनः जेहन में आ गया। नागाकोठी दस बजे पहुंचे तब तक वहां घोड़ेवाले नहीं आये थे। पैदल चलना तो ना मुमकिन था ही। पौन घंटे इंतजार के बाद एक व्यक्ति पांच पांच सौ रु. में दो घोड़े पंचतरणी तक के लिये तय कर गया। उसे घोड़े तैयार कर लाने में बीस मिनट और लगे। इसी अवधी में मुझे पता लग गया कि हमने प्रति घोड़ा 150 रु. ज्यादा दे दिये हैं। बैग घ ाोड़ेवालों के सिर लाद हम घोड़ों पर बैठ यात्रा करने लगे। शेषनाग में बारिश का डर दिखा कर घोड़ेवालों ने घोड़े नहीं रोके। गणेशटॉप के आगे उतार पर हम घोड़ों से उतर ही पड़े। जांघे व कमर दर्द करने लगी थी। पौषपथरी के शानदार लंगर पर पहुंच हमने और घोड़ेवालों ने भरपेट भोजन किया। अन्य किसी लंगर पर घोड़ेवालों को खाने की अनुमति नहीं है। इसलिये सब घोड़ेवाले यहीं आकर रुकते हैं। घुड़सवारी के दौरान कुछ चुटुकले बने। मेरी पत्नी का वजन ज्यादा था तथा मेरे बैग में वजन ज्यादा था। अब घ ाोड़ेवाला स्वयं सोचे कि उसे घोड़े पर ज्यादा वजन डालना है या स्वयं पर।

'मैं पत्नी को अमरनाथ यात्रा लाया शायद कुछ वजन कम हो जाये। वजन कम हुआ पर घोड़ों का।'

महागणेशटॉप पर सामानों की चैकिंग होती है, छोटे–छोटे बैगों की भी। मेरा घोड़ा आगे तथा पत्नी का पीछे था। मैंने जांच अधिकारी से कहा, 'मेरे साथ बम नहीं एटम बम है, पीछे देखो।' जांच अधिकारी दक्षिण भारतीय होते हुये भी चुटुकला समझ बहुत जोर से हंसा। फिर सभी को सुनाते हुये जोर से बोला,

'भाभीजी देखो भाई सा. क्या कह रहे हैं?' मैंने भी नकली अनुनय करते हुये कहा,

'अब रहने भी दो, अपनी आपस की बात है। अभी मुझे यात्रा पूरी करनी है।'

पोषपथरी लंगर में अनुपम व्यवस्था होती है। ठहरने के तंबू, आधुनिक शौचालय व स्नानघर, बहुत बड़ा टीन शेड–जिसमें पांच–सात सौ लोग बारिश धूप से बचाव कर सकते हैं। खाने में मुरब्बे, जलेबी, इडली, डोसा, उतप्पम, चिलड़े, पावभाजी, दूध–जलेबी, परांठे और न जाने क्या क्या?

पंचतरणी में

पांच बजे बाद पंचतरणी के घोड़ा स्टैण्ड पर उतर कड़ी सुरक्षा जांच से गुजरते हुये शिविर के अंदर लंगर के सामने पहुंचे। मैं पूरे रास्ते मेरे दल को देखता आ रहा था पर कोई दिखाई नहीं दिया था। मैंने पत्नी को एक लंगर पर सामानों सहित बिठाया और मैं तंबू नगरी में मेरे साथियों को देखता हुआ दूसरे किनारे तक चला गया। तंबू व्यापारी मेरे से बार–बार रुकने की व्यवस्था लेने का अनुरोध कर रहे थे

और मैं उन्हें मेरे साथियों द्वारा तंबू लेने की बात बता रहा था। अंत में वह व्यापारी मुझ से टकरा ही गया जिसने हमारे लिये 11 पलंग बुक किये थे। मैं उसके साथ तंबुओं की ओर बढ़ा ही था कि हमारा जवान साथी अंशुल मिल गया। थोड़ी ही देर में हम सामानों सहित तंबू में जा पहुंचे। मां नहीं आ पाई इसका सभी को बहुत दुःख है। उसके स्वास्थ्य एवं रुकने की व्यवस्था के बारे में मैंने सबको विस्तार से बताया। मां के बारे में मेरा चिंतन लगातार बना रहा। मेरे घोड़ेवाला लंगर से मां को लाकर अमरनाथजी में हमें मिला देगा मात्र पच्चीस सौ रु. में। मैंने रास्ते में उससे बात कर ली पर जब हम पंचतरणी में उतरे तो हमारी स्वयं की हालत देख मैंने उससे मना कर दिया।

पंचतरणी में पलंगों वाले तंबू में 150 रु. प्रति व्यक्ति के हिसाब से जगह ली गई। 10 रु. में चाय, 5 रु. बोतल तथा तीस रु. प्रति बाल्टी में गरम पानी मिल सकेगा। हम दस सवारियों के बीच बारह पलंग लगे हैं। अभी यात्री कम आ रहे हैं। यहां तंबूवालों ने यूनियन बना रखी है इसलिये किराये कम नहीं हुये। हमारे ग्यारह जवान साथियों का दल अलग होकर आज ही अमरनाथ पहुंच गया है। अब साथियों की जॉजबल से शेषनाग यात्रा के बारे में भी लिख दूं। जानकीलालजी एवं उनकी पत्नी को पालकियों में बिठाया गया। बाद में अन्यों के लिये घोड़े भी किये गये। जगदीशजी खंडेलवाल जो हमारे मजबूत स्तम्भ थे, उन्हें उनकी कमजोर सी दिखने वाली पत्नी हाथ थामें घसीटती सी शेषनाग तक लाई। शाम का समय, ठंडी हवा और भारी चढ़ाई एक अंशुल को छोड़ सब बीमार हो गये। उल्टी, बुखार और चक्कर। हमारे 11 सदस्यीय नौजवानों के दल ने शेषनाग में जल्दी पहुंच 1000 रु. में एक तंबू कर लिया था। पहले तो बाद में आये सब लोग भी उसी में घुसे, बाद में जगह कम पड़ने पर दूसरे तंबू में किराया देकर सोये। तंबुओं में जमीन पर पाल व बिस्तर बिछे थे जिनमें सीम (नमी) आ रही थी। दवाइयां खा–खाकर सोने के बावजूद किसी को भी अच्छी नींद नहीं आई। अंशुल लंगर से जाकर खाना लाया पर किसी से खाया नहीं गया और फेंकना पड़ा। शेषनाग से सबक लेकर आज पलंगों वाले तंबू किये गये।

पंचतरणी में फोन सुविधा है पर भारी भीड़ के कारण नम्बर नहीं आया। बारां से हम बाईस यात्री चले थे। मां जॉजबल रुक गई और ग्यारह साथी आगे निकल गये। अंशुल, फूफाजी कन्हैयालालजी तथा मैं तीनों पंचतरणी में खूब घूमे। जानकीलालजी, उनकी पत्नि कमला, मेरी पत्नि कृष्णा, जगदीशजी खंडेलवाल व उनकी पत्नी संतोष, विद्या बुआ तथा आशा भाभी सब थकान के मारे तंबू में दुबके रहे। यहां आकर जगदीशजी खंडेलवाल के विचारों में विचित्र परिवर्तन आ गया।

'भगवान ने कब कहा ठंडे पानी से नहाओ या नहा कर ही आओ? भोले बाबा कौन से रोज नहाते थे? भोले ने कब कहा पैदल आओ? जब घोड़े उपलब्ध हैं तो बेकार में ही अपनी टांगें क्यों तुड़वायें?'

ऐसे जुमले वे अक्सर बोलते रहे। रात मुझे तो अच्छी नींद आई।

अमरनाथजी दर्शन

24–7– 2006 सोमवार प्रातः महिलाओं ने गर्म पानी लेकर स्नान किया। मैंने अमरगंगा में ठंडे पानी से ही स्नान का निश्चय किया। यहां से गुफा मात्र साढ़े छः किमी है पर मार्ग विकट है। हमने घोड़ों से ही जाने का निश्चय किया हालांकि विद्या बुआ, संतोष खंडेलवाल व आशा भाभी पैदल जाना चाहती थी पर उसमें सब बिछुड़ जाते। आगे घोड़ों से उतरने के बाद भी गुफा तक बहुत चलना पड़ता है।

अमरगंगा पहुंच हम चार यात्रियों ने ठंडे बर्फ के से पानी से स्नान किया। बीस रु. में एक बाल्टी गर्म पानी भी ले लिया था। बाद में एक–एक लोटा गर्म पानी शरीर पर डाल लिया। तेज धूप खिल आई और सर्दी गायब हो गई। गर्म कपड़ों की भी जरुरत नहीं रही। आगे एक दुकान पर अपने सारे सामान डाले। उससे भोले की पूजा सामग्री खरीदी और गुफा की ओर बढ़ गये। पत्नी को ज्यादा तकलीफ होने पर उसे सौ रु. में एक पालकी करवा कर गुफा तक भिजवाया। जानकीलालजी तथा जगदीशजी खंडेलवाल को सीढ़ियां चढ़ने में ज्यादा तकलीफ हो रही थी। एक चिकित्सा शिविर में दोनों ने आक्सीजन लगवाई। धीरे–धीरे सभी पहुंचे ही। गुफा से कोई सौ सीढ़ी पूर्व से ही लाइन लग रही थी। वहां पास ध ाारकों को कतार मे आगे जाने दिया जा रहा था। मेरे पास भी लंगर के पास थे जो हमें हमारी यूथविंग ने उपलब्ध करवाये थे पर मैंने उनका उपयोग नहीं किया। यहां गुफा में भोले के दरबार के सामने खड़े होने

का सौभाग्य कब मिलता है? दर्शन के बाद तो तुरंत ही यहां की व्यवस्था हमें बाहर का रास्ता दिखा देगी। भोले नाम का जप चलता रहा। गुफा से पवित्र जल की बूंदे हमारे शरीर पर गिर हमें पवित्र करती रही। सफेद कबूतर का जोड़ा भी हमारे को दिखाई दिया। आज सावन की सोमवती अमावस्या है और हम खाली पेट भोले के दर्शन कर रहे है। शायद ही ऐसा सुखद व पवित्र संयोग दुबारा कभी बने। एक सुखद आश्चर्य और हुआ। हमारे 11 जवान साथी दर्शन कर नीचे उतरते हुये दिखाई दिये। उनसे बात की तो पता लगा कि उन्होंने रात भी दर्शन कर लिये थे। फिर उन्हें किसी ने आज के पवित्र दिन का महातम्य समझाया तो वे आज भी दर्शनार्थ रुक गये। अब उन्होंने हमारे से विदा ली। वे बालटॉल से उतरेंगें तथा एक दिन श्रीनगर घूमेंगें। उनके सामान वे लोग जम्मू में ही छोड़ कर आये हैं। हमें तो लंबे रास्ते से ही जाना है। सामान पंचतरणी तथा चंदनबाड़ी में और मां जॉजबल में है।

भोले के शिवलिंग के सामने भीड़ के कारण हमें आध मिनट भी खड़े नहीं रहने दिया गया। गुफा में आगे जाकर हमने यह कसक पूरी की। कोई पंद्रह मिनट तक रुके। प्रसाद लिया, अमरगंगा का जल भरा तथा फोटोग्राफी भी की। जूते कोई सौ सीढ़ियों नीचे खोले गये थे। वापसी में पत्नी के जूते गायब हो गये। उसे बाजार तक नंगे पैर चलना पड़ा। पहली दुकान आते ही दो सौ रु. में जूते पहने। आगे के लंगर पर हलुआ तथा चिलड़े खाये। थकान तथा सर्दी से हमारा मुंह कडुआ सा हो रहा है तथा कुछ खाने की इच्छा नहीं हो रही। कई साथियों ने चिकित्सा कैम्प से दवाइयां लेकर खाई। दो महिलाओं के बिछुड़ जाने के कारण हमें वापस दुकान तक पहुंचने में कोई एक घंटा विलंब हुआ। हम पूजावाले की दुकान पर पहुंचे और अंदर लेटकर कोई घंटाभर आराम करते रहे। दुकानदार की सेवाऐं हमें अच्छी लगी।

देरी होने के कारण हमने वापसी यात्रा भी घोड़ों से ही करने का निश्चय किया। आशा भाभी नहीं मानी और वह पैदल ही रवाना हो गई। घोड़े पर बैठते समय विद्या उर्फ कलावती बुआ गिर गई गनीमत रही उन्हें ज्यादा चोट नहीं आई। उन्होंने शोर मचाया। एक मिलेट्री जवान ने आकर घोड़ेवाले के दो बेंत जमाये। फिर दूसरा घोड़ा करवाया। रास्ते में बारिश आने पर हमने रैनकोट भी निकाले और भीगे भी। रास्ते में जॉजबल के लंगर का सेवादार घोड़े पर बैठ अमरनाथ जी की ओर जाते दिखाई दे गया। मां के हाल पूछे। माताजी ठीक है तथा सुबह शाम आरती में भजन गाती व नाचती है, यह जान मन को तसल्ली मिली। आशादेवी पैदल चलकर लगभग हमारे साथ ही पंचतरणी पहुंच गई। पर इसका नतीजा अच्छा नहीं रहा। उन्हें तेज बुखार हो गया। पंचतरणी में हमारा तंबू था ही। आगे जाने की धमकी दे हमने किराये में कुछ कटौती करवा ली। सामान पटक सभी खाना खाने लंगर पर आ गये। साथियों को पंचतरणी में रुकना अच्छा नहीं लग रहा था पर आज मैं अपनी बात मनवाने में सफल रहा। कल जल्दी निकल कर हम पहलगांव पहुंच ही जायेंगें। रात में मामूली बरसात आई। आज भी हम बारां हमारे परिजनों से फोन से बात नहीं कर सके। रात अच्छी कटी।

25–7–2006 मंगलवार हमने तंबू तो जल्दी ही खाली कर दिया पर घोड़ों का एक घंटा इंतजार करना पड़ा। पद्यात्री तो कोई दो घंटा पहले ही यहां से निकल चुके थे। हमने 2600 रु. में दस घोड़े शेषनाग तक के किये। रास्ते में आध घंटा पौषपथरी लंगर का आनंद लिया। गणेशटॉप से आगे उतार पर कोई एक किमी सभी पैदल चले। साढ़े ग्यारह बजे शेषनाग उतर सामने के लंगर पर परांठे खाये। यहां आते ही मुझे मां से मिलने की उतावली सी होने लगी। मैं सबसे पहले दो घोड़े नागाकोठी तक के पचास रु. प्रति घोड़े में कर पत्नी के साथ रवाना हो गया। रास्ते में तीखे उतार पर पत्नी गिरने के डर से घोड़े से उतर कर पैदल चली। नागाकोठी से जल्दी–जल्दी चल हम जॉजबल के लंगर में मां के पास पहुंचे। मां अच्छी है और सो रही है। मुझे मां को छोड़ यात्रा पर जाने का बहुत अफसोस हुआ और मैं मां के पांव पकड़ कर रोने लगा। मां ने ही आश्वस्त किया,

'अब बाबा मुझे बुलाना ही नहीं चाहता था, तुम्हारे जाने के थोड़ी देर बाद ही मेरी तबियत ठीक हो गई थी। मैंने लंगर वालों से कहा भी था कि मुझे आगे का घोड़ा करवा दो। आप लोग मिल ही जाते, पर इन्होंने अकेले नहीं भेजा।'

थोड़ी देर आराम के बाद मैंने लंगर वालों का आभार प्रकट किया एवं सभी से विदा ली, अब तक हमारे बाकी साथी भी आ गये। पास के ही दूसरे लंगर में हम सबने चाट खाई और पिस्सूटॉप की ओर

प्रस्थान किया। यहां हमें घोड़े मिलने में तकलीफ आई तथा हमें पचास के बजाय सौ रु. प्रति घोड़ा देने पड़े। यहां से हम पैदल ही जाना चाहते थे पर मेरी मां, पत्नी तथा जानकीलालजी व कमला भाभीजी को तो घोड़ा चाहिये ही। आगे पीछे हमें आठ घोड़े मिल गये। मैं, अंशुल उर्फ बंटी तथा आशा भाभीजी पैदल ही पिस्सूटॉप पहुंचे। मैंने पी.सी.ओ. दिखते ही बारां फोन कर हमारी सकुशल यात्रा की सूचना दी फिर हमारे घुड़सवार साथियों को ढूंढा। पिस्सूटॉप से हम सब पैदल ही उतरे। उतार भी बहुत खतरनाक होता है। उतार में पंजे एवं घुटने दर्द करते हैं। मां सबसे आगे चली। बारिश की आशंका ने भी हमें दौड़ाया। यहां चंदनबाड़ी आने के बाद हम रास्ता भूल गये और कई बार पूछताछ कर थके हारे बेस कैम्प में घुसे। रास्ते के कई लंगरवालों ने हमें विभिन्न सुविधाओं का प्रलोभन देकर बुलाना चाहा पर हमें तो वहीं पहुंचना था जहां हमारा सामान रखा था। हम श्री अमरनाथ सेवा शक्ति मंडल के लंगर में पहुंचे। धुंधलका होने लगा है। वहां हमारी बरातियों की तरह सेवा की गई। बहुत सारे कंबल बिछा दिये गये जिन पर हम पसर गये। हमें लेटे हुये यात्रियों को ही वहां के कर्मचारियों ने पानी, चाय तथा नाश्ता दिया। हमने लंगर में से अपने सारे सामान संभाल कर निकाल लिये। कोई नुकसान नहीं हुआ है। हमने हमारे बैटरी डिस्चार्ज होने से बंद हुये सभी मोबाइल्स यहां चार्ज पर लगा दिये। सामानों को सिर पर लगा कर हम लेट गये। कुछ फुर्सत निकाल हमने अभी तक का अपना हिसाब कर लिया। हिसाब के दौरान किसी का पांच सौ का नोट गिर गया। हमने वह नोट लंगर की दान पेटी में डाल दिया। इस लंगर के पीछे गर्म पानी के लिये छोटा बायलर लगा हुआ है तथा आधुनिक शौचालय और ढका हुआ स्नानघर है।

रास्ते में जगदीशजी खंडेलवाल व मैंने रात पहलगांव जाकर अच्छे होटल में रुकने की मंत्रणा कर ली थी। रास्ते में टैक्सी वाले हमें 40 रु. सवारी में पहलगांव ले जाने के लिये लगातार फूतले खाते रहे पर हमने किसी से पक्का नहीं किया। अभी हमें लंगर से सामान निकालकर जमाने हैं फिर थोड़ी देर आराम करना है उसके बाद आगे चलेंगें। लंगर में जब हमें बारातियों की सी सेवा मिली और सभी नींद निकालने लगे तथा थकान के मारे किसी की भी इच्छा आगे जाने की नहीं लगी तो हमने रात यहां चंदनबाड़ी में ही गुजारना तय कर लिया। वैसे पहलगांव में अब अमरनाथ यात्रियों के लिये शिविर नुनवान में लगाये जाते हैं जहां से बस अड्डा चार किमी दूर है। बस अड्डे के आसपास रुकने के अच्छे होटल हैं। पर हमारे पसंद का भोजन तो कैम्प में ही मिल सकता है। अब वहां जाकर हम अच्छे कमरों में सो तो लेते पर भोजन की तकलीफ रहती।

इस वर्ष हम यात्रा पर जल्दी आये हैं इसलिये छड़ी मुबारक के दर्शन नही हो पा रहे हैं। छड़ी मुबारक 5 अगस्त को पहलगांव पहुंचेगी।

चंदनबाड़ी लंगर में रात्रि विश्राम

अभी यहां यात्रियों की भारी कमी चल रही है। लंगर खाली पड़े हैं। इसीलिये हमारा इतना स्वागत सत्कार हो रहा है। रात हमारे लंगर में दाल रोटी व सब्जी बनी। देशी घी में चुपड़े हुये घर के से फुलके। सबने भरपेट खाना खाया। चंदनबाड़ी धुंधलके में और भी खूबसूरत लग रही है। हम प्राकृतिक सौन्दर्य देखते हुये सो गये। सारी सुविधाओं के बावजूद कई दिक्कतें भी यहां आई। देर रात तक सारे लंगर वाले प्रतियोगी भाव से तेज आवाज में भक्ति संगीत बजाते रहे। हमारे पंडाल में बारह बजे तक रंगीन टी.वी. पर फिल्म देखी जाती रही। यहां के सेवादार व कर्मचारी तथा कई यात्रीगण बंद पांडाल के अंदर सिगरेट पीते रहे जिससे हमें विशेष तकलीफ हुई। रात में लोगों का आवागमन भी हमारी नींद में व्यवधान पैदा करता रहा।

रात दो बजे मैं पेशाब करने के लिये उठा। चौकीदारी के हिसाब से एक कर्मचारी कुर्सी पर बैठा ऊंघ रहा था। सारी बत्तियां बंद थी, मुझे पेशाबघर तक पहुंचने के लिये टॉर्च का उपयोग करना पड़ा। मैंने रात में स्टोररुम से और कंबल निकाल कर मेरे साथियों को उढ़ाये क्योंकि मेरे को स्वयं को दो कंबल ओढ़ने के बावजूद सर्दी महसूस हो रही थी।

तारीख 26–7–2006 बुधवार प्रातः चार बजे से ही हमारे दल के लोगों का उठने एवं निबटने का सिलसिला शुरु हो गया। यहां बहुत ठंड है तथा पानी भी बर्फ जैसा है। लंगर वालों ने हमें नहाने धोने के

लिये बायलर से पानी गर्म करके दे दिया। पानी गर्म करने का तरीका मैंने भी सीख लिया और हम सब साबुन मल–मल कर गर्म पानी से नहाये। आखिर पांच दिन का मैल जो निकालना है। लंगर में पांच बजे से चाय तथा 6 बजे से नाश्ता वितरित होने लगा। हम सब कामों से निबट सामान पैक कर पहलगांव जाने के लिये सड़क पर आ गये। सारे लोग एक टाटा सूमो गाड़ी में सिकुड़कर बैठ गये जो पांच सौ रु. में पहलगांव बस स्टैण्ड तक के लिये की गई थी। सारे सामान कैरियर पर बांध दिये। थोड़ा आगे बढ़ते ही बैरियर पर मिलेट्री वालों ने दो साधुओं को हमारी गाड़ी में और ठूंस दिया। साधु लोग इसी तरह फ्री यात्रा करते हैं। पहलगांव से पूर्व यात्रियों एवं गाड़ियों की सघन जांच हुई।

पहलगांव बस स्टैण्ड से कटरा के लिये दूसरी गाड़ी करने में पौन घंटा लग गया। 300 रु. प्रति सवारी में एक 11 सीटर मिनी बस की। इसी बीच हम पानी पेशाब से निबटे। सफर के लिये फल खरीदे तथा केटलियां पेयजल से भरी। मिनी बस का ड्राइवर गलत आदमी निकला। सारे रास्ते हमें मीठी–मीठी बातें कर बेवकूफ बनाता रहा। गाड़ी में एक सवारी अतिरिक्त बिठा ली। रास्ते में कहीं स्नान नहीं कराया। काजीगुंडा में बिना कहे बस स्टैण्ड पर गाड़ी रोक हमें सूखे मेवों की खरीददारी करवा दी और स्वयं कमीशन का माल बटोरता रहा। भोजन कराने के लिये कहीं लंगर पर गाड़ी नहीं रोकी। ज्यादा जोर देकर कहा तो कुद के एक होटल पर भोजन करवाया जहां मैदे की चीठी रोटियां मिली। कटरा पहुंचने पर हमें तेज बरसात मिली।

कटरा होटल निखिल पैलेस

कशमीर रोड से ही हमने होटल देखने शुरु किये। कमीशनखोर ड्राइवर के चक्कर में कैसे वाजिब कीमत में होटल मिलता? हम भी घूमते रहे ओर उसकी नजर बचाकर गली में नवनिर्मित 'निखिल पैलेस' में पांच कमरे अटैच 1100 रु. में लिये। नीचे के कमरे सीलन भरे थे अतः हमें तीसरी मंजिल पर कमरे पसंद आये। पर इन कमरों की खामियां भी बाद में पकड़ में आई। बरसात होने पर कमरों के आगे एक–एक इंची पानी भर गया। यहां के कूलरों के खांचों पर ग्रिल नहीं लगाई गई है। ताला लगा होने के बावजूद कूलर स्टैण्ड को खिसकाकर कोई भी कमरे में घुस सकता है। बाथरुम में गर्म पानी का सिस्टम चालू नहीं था। तीन कमरों में पश्चिमी कमोड शौचालय बने हैं जो हममें से किसी को रास नहीं आते। पानी और बिजली का तो भगवान ही मालिक है। पानी के लिये कई बार चिल्लाये, झल्लाये। बिजली रात भर ही बंद रही। कमरे या बाथरुम में कहीं शीशा नहीं था और न हीं कहीं कपडे टांगने की खूंटी लगाई गई है। हमारे पास धोने के बहुत सारे कपड़े हैं। अनुरोध के बावजूद पत्नी ने सारे ही कपड़े ध ाो डाले। उन्हें सुखाने के लिये बाहर रस्सी बांधी गई। हमारे अन्य साथियों ने भी कपड़े धोये जिन्हें सूखता देख होटल कर्मचारी बहुत नाराज हुआ पर हमने उसकी कोई परवाह नहीं की।

कमरों में सामान जमा पुरुषवर्ग वापस नीचे आ उतरा था। सात दिन पुरानी दाढ़ियां बनाने के लिये नाई की दुकान पर लाइन लगाई। यहां नाईयों की दरें भी बारां से दुगनी है। सबने मालिश भी करवाई। धोबी की दुकान ढूंढी पर उसने धुलाई इस्तरी की दरें बहुत ज्यादा बताई। खाने के ढाबे भी दे खे। हमारा आगे का कार्यक्रम वैष्णव देवी यात्रा पर जाना है। इसके लिये हमने जानकारी प्राप्त की। हमने वैष्णव देवी यात्रा पर कल सुबह निकलने का निश्चय किया। ज्यादा होशियारी बताते हुये हम रात ही टोकन लेने रजिस्ट्रेशन कार्यालय जा पहुंचे। वहां पता लगा कि टोकन के बाद दो घंटे में बाणगंगा का नाका पार करना जरूरी है। वैसे यहां के दुकानदारों के मुताबिक अभी यात्री बहुत कम आ रहे हैं। बरसात भी लगातार हो रही है, सुबह भी बारिश की स्थिति देखकर ही निकलना पड़ेगा। हमने निखिल पैलेस में आकर हमारे इस्तरी के सारे कपड़े यहां के कर्मचारी को ही दे दिये और शाम तक आराम किया। रात हम अच्छा होटल देख भोजन के लिये घुसे और जम कर खाना खाया। यहां तवे की रोटी का दुगना पैसा चार रु. प्रति रोटी वसूला गया। वापसी में महिलायें परिधानों एवं शॉल कंबल आदि की दुकानों पर भाव कराती हुई लौटी।

होटल में दो मंजिल सीढियां चढ़ कर कमरों में पहुंचना हम थके यात्रियों के लिये भारी परेशानी का कारण था। महिलायें तो बस भोजन करने के लिये ही नीचे उतरी। हम कमरों में पहुंचे तो बिजली

गायब थी। पांच मोमबत्तियां होटल वाले ने उपलब्ध करवाई पर वे कितनी देर चलती। पता लगा इस मो. हल्ले का ट्रांसफार्मर ही फुंक गया है और बिजली कल दोपहर तक ही आ पायेगी। हमें अंधेरे में ही सोना पड़ा। गर्मी नहीं थी नींद आ गई।

तारीख 27–7–2006 गुरुवार प्रातः नहा धो 6 बजे ही जगदीशजी खंडेलवाल तथा मैं वैष्णवदेवी यात्रा रजि. काउंटर पर लाइन में लग गये। यहां लोग बाग चार बजे से ही लाइन में लगे थे एवं लाइन बहुत लंबी हो चुकी थी। सवा 6 बजे रजिस्ट्रेशन शुरु हुआ। उसके बाद हमें ज्यादा समय नहीं लगा।

हम दोनों ने दो बार दर्शन करने की योजना के तहत ग्यारह–ग्यारह यात्रियों के रजिस्ट्रेशन करवा लिये। यहां कंप्यूटर स्लिप 1 से 9 तक की ही निकाली जाती है जिससे उसमें फेर बदल की गुंजाइश न रहे। हम दोनों को ही 9 एवं दो की दो पर्चियां दी गई। आगे जाकर हमें इस व्यवस्था से ही दर्शन हो पाये। सात बजे हमें रजिस्ट्रेशन मिल चुका था तभी मेरे मोबाइल पर बंटी का फोन आया कि हम 6 साथी बाण गंगा पर आपका इंतजार कर रहे हैं। हम तुरंत ही ऑटो कर बाणगंगा पहुंच साथियों से मिले। एक ठीक से होटल पर बैठ चाय सेवन की गई और आठ बजे जब यात्रा शुरु हुई तो सब आगे पीछे हो गये। बरसात थम चुकी है हालांकि गहरे काले बादल छाये हुये हैं। हम सभी में पैदल यात्रा के प्रति उत्साह है। मां ने आज भी व्रत की घोषणा कर रखी है। मुझे उसकी ज्यादा चिंता थी परंतु वह तो देखते ही देखते हम सबसे आगे निकल गई। मां की पैदल चलने की क्षमता देख मुझे उसके अमरनाथ यात्रा न कर पाने का ज्यादा दुःख हुआ। मां तो आराम से चल लेती। व्यर्थ ही हम एक भ्रम पाले रहे।

अर्द्धकुंवारी

हम 11 बजे अर्द्धकुंवारी पहुंचे। अंशुल व जगदीशजी 10 बजे ही वहां पहुंच गये थे। मेरा प्रयास करने के बाद भी उनसे मोबाइल से संपर्क नहीं हो पाया था और उन्होंने यहां दर्शन के टोकन नहीं लिये। मोबाइल सेवा में व्यवधान आने मात्र के कारण से हम अर्द्धकुंवारी दर्शन नहीं कर पाये। जगदीशजी को यहां भी टोकन लेना पड़ता है इस बात की जानकारी नहीं थी। हमारे जाने के बाद टोकन लिये गये तो हमें बहुत बाद का नम्बर मिला। इस समय तक नीचे से आने वाले यात्रियों की भारी भीड़ हो जाती है। हमारा पांच सौ अठारह नम्बर आया है अभी चार सौ अड़सठ चल रहा है। वहां के स्टॉफ ने बताया कि साढ़े बारह बजे तक नम्बर आ जायेगा। हमने यहां इंतजार में दो बेंचों पर बैठ नाश्ता पानी किया। मां के लिये फलाहारी फ्रूट चाट लाया। यहां श्राइनबोर्ड द्वारा किराये से दी गई दुकानें बहुत महंगी है। एक पांच रु. के लगभग का खीरा तीस रु. में दिया गया। कन्हैयालालजी फूफाजी दुकानदार से उलझ गये।

'यहां माताजी के दरबार में यात्रियों को लूटते हो।'

दुकानदार ने भी तल्ख भाषा का प्रयोग किया।

''पांच से दस लाख रु. साल किराया देते हैं। बाल बच्चों का पेट मुश्किल से भर पाता है। लेना देना कुछ नहीं, आ जाते हैं यहां भाषण देने।''

सारी झड़प के बावजूद हमने वहीं से सामान खरीदा।

कुछ देर बाद बड़ा संकट खड़ा हो गया। पत्नी ने बताया है कि उसे मासिकी आ गई है। मैं एक दुकान से उसके लिये पैड लाया। हमारे धार्मिक नियम के अनुसार अब पत्नी मंदिर नहीं जा सकती। यात्रा रद्ध। उससे मैंने हॉटल में अकेले जाने एवं वहां नहाकर सो जाने का निवेदन किया पर वह अकेली जाने को तैयार नहीं हुई। वह लगातार कहती रही कि मै यहां अर्द्धकुंवारी में बैठी रहूंगी आप दर्शन कर आओ, वापसी में मुझे ले चलना। पर यह भी संभव नहीं था। हमारे पास ओढ़ने बिछाने तथा उसके नहाने के कपड़ों की कोई व्यवस्था नहीं है और यहां अभी दिन में ही सर्दी लग रही है। इधर मां को खाना खिलाना है। बहुत देर चिंतन के बाद मैंने स्वयं ने पत्नी को हॉटल छोड़ने जाने का निर्णय लिया। हम अर्द्धकुंवारी दर्शनों हेतु हमारा नम्बर आने का इंतजार करते रहे। हमने बैंचें रोक ली तथा प्लास्टिक शीट बिछा ली। एक घंटे बाद भी जब टॉकन क्रमांक मात्र दस अंक ही खिसका तो मैं यहां दर्शनों के प्रति निराश हो

गया। शाम के पांच छः भी बज सकते हैं। अब हम सबने भोजन करने का निश्चय कर लिया। यहां के दो भोजनालयों में भारी भीड़ के कारण घुसना भी मुमकिन नहीं हुआ। इसी समय हमारे युवा 11 साथियों का दल भी यहां हमें मिल गया। वे दो दिन श्रीनगर घूम आये हैं। वे कटरा में भी वैष्णव भवन में ही ठहरे हैं। उन्हें ग्रुप नं. 540 मिला है। मैंने उन्हें कह दिया कि वैष्णव देवी दर्शन कर आओ, वापस आओगे जब तक आप लोगो का यहां नं. आ ही जायेगा। हम सारे भोजन करने श्राइनबोर्ड के भोजनालय में गये जहां मात्र चना पूरी एवं राजमां चावल उपलब्ध था। कतार में खड़े होने के बाद जब हमारा नम्बर आया जो पूरी चना खत्म हो गया। मैंने दुबारा अंशुल को कतार में खड़ा किया, राजमां चावल ही खा लेंगे पर उसका नं. आने तक यह भोजन भी समाप्त हो गया। हम भूखे ही रह गये। यहां के एक भोजनालय में मैं मां व पत्नी के साथ पहुंचा पर वहां इतनी बदबू थी कि हम अंदर ही नहीं घुसे। अंत में मैंने मां को बैंच पर बिठाया और हॉटल से चार रोटी एक दाल पैक करवा के लाकर मां को दी। बहुत देर बाद हमारे युवा साथी मंदिर की ओर गये। वहां पता लगा कि अर्द्धकुंवारी माता मंदिर के दर्शन तो खुले है। यह लाइन तो सिर्फ गर्भजून में से निकलने के लिये है। हमने कुछ विचार विमर्श कर मंदिर दर्शन कर आगे बढ़ने का फैसला कर लिया।

हम सब साथ जाकर मंदिर तथा गर्भजून से बाहर निकलने के रास्ते के दर्शन कर आये। मैंने मां को साथियों के भरोसे छोड़ा और मैं पत्नी के साथ पैदल निखिल पैलेस होटल की ओर चल पड़ा। सारे साथी इसी के साथ वैष्णवदेवी यात्रा पर रवाना हो गये। उम्मीद से ज्यादा समय नीचे उतरने में लगा। बाणगंगा से पूर्व एक होटल पर बैठ दोनों ने बेस्वाद खाना खाया। बाणगंगा से बस स्टैण्ड चौराहा ऑटो से आये। रास्ते में एक दुकान से पत्नी के लिये चप्पल खरीदी। अर्द्धकुंवारी से उतरते समय पत्नी की चप्पल टूट गई थी। सारे रास्ते नंगे पांव आई है। इस यात्रा में पत्नी यह तीसरी जोड़ी पहन रही है। पत्नी के पैरों में छाले भी हो गये हैं। मैंने हॉटल में कुछ देर आराम किया फिर नहा धो धुले हुये कपड़े पहने, पत्नी को आवश्यक हिदायतें दी और छोटे से बैग में बहुत कम सामान ले वापस वैष्णव देवी की यात्रा पर निकल पड़ा। सवा चार बजे बाणगंगा ऑटो करके पहुंचा। तुरंत ही 245 रु. काउंटर पर जमा करवा कर एक मजबूत घोड़ा किया। इस राजू नामक घोड़े का साईस या मालिक मंजूर युवा है। हम तेजी से आगे बढ़े। कई जगह चैकिंग के नाम पर मुझे घोड़े से उतरना पड़ा। मैंने पूर्व में ही मेरी जेब में दो व्यक्तियों के दर्शन का टोकन रख लिया था जिस पर अब मोहर लगाने का समय खर्च नहीं हुआ। हत्थीमत्था से पूर्व आध घंटा घोड़े के नाश्ते पानी के लिये रुके। बैंच पर बैठ घाटी में धुंध भरा महासागर तथा पेड़ों पर बंदरो की हरकतें देखने का आनंद लिया। सवा सात बजे वैष्णव देवी उतरा। मेरा पूरा दल दर्शन कर वापस लौट रहा है। मैंने सबको घोड़ों से ही जाने की हिदायत दी है। भैरोंघाटी से सांझी छत अभी रास्ता बंद है। हमारे दल में से कोई भैरों बाबा के दर्शन करने नहीं जा रहे। मां का थैला मंदिर के अंदर सुरक्षा कर्मियों ने रखवा लिया है उसमें मां के दोनों चश्मे हैं।

भगवान की कृपा ही थी कि चार दिन से बंद वैष्णवदेवी यात्रा आज ही खुली है। नया छोटा रास्ता तथा सांझी छत से भैरव घाटी मार्ग अभी तक नहीं खुल पाया। हमारे दल को अमरनाथयात्रा की थकान है। रात हो गई है तथा सर्दी पड़ रही है ऐसे में भैरोंनाथ दर्शन जाना कठिन हो जाता। ईश्वर की कैसी माया है मेरी मां को अमरनाथ बाबा ने दर्शन नहीं दिये और पत्नी को माता वैष्णव देवी ने। इधर कई साथी जगदीशजी खंडेलवाल से नाराज हैं वे टोकन पर्चियां लेकर कहीं चले गये और बहुत देर में मिले।

वैष्णवदेवी

मैं पौने सात बजे दरबार पहुंचा। यहां आरती के समय सायं छः से नौ आम यात्री के लिये दर्शन बंद रहते हैं। छः बजे तक सभी ग्रुप वाले दर्शन करने जा रहे थे। मतलब भीड़ और इंतजार बिल्कुल नहीं है। अब जब दर्शन बंद हैं तो कतार लगेगी ही। मेरे मन में आया कि मैं तीन घंटे कहीं सो लूं फिर दर्शनों की कतार में लगूंगा। मेरे पास एक बैग, मां का दिया हुआ प्रसाद का थैला, मोबाइल फोन तथा रुपये पैसे हैं। मैंने क्लॉक रुम देखे। मोबाइल अलग स्थान पर जमा होगा। मैं सरस्वति भवन के अंदर घुस गया। वहां दो पटिये खाली थे। मैं एक पर लेट गया और आसपास लेटे साधुओं से बातचीत

कर परिचय लिया। कुछ देर बाद ही मुझे पेट में मरोड़ी महसूस हुई। मेरा सामान साधुओं के भरोसे यहीं छोड़ूं या क्लॉक रुम में रखूं। मैं साधुओं पर अविश्वास कर–बहुत चल तथा बहुत सारी सीढ़ियां उतर कर क्लॉक रुम पहुंचा। वहां के कर्मचारी ने पूछा,

'इसमें मोबाइल तो नहीं है।'

मैंने कहा, 'मोबाइल है और उसका स्वीच बंद है।'

'यहां रुपये, मोबाइल, कैमरा आदि कीमती सामान वाला बैग जमा नहीं होता।'

'मुझे पता है, मैं आपसे ओरों की तरह कह देता नहीं है तो। आप मुझे सच कहने का दंड दे रहे हैं।'

'इतने बड़े तीर्थ में आकर भी किसी ने झूठ बोला तो उसका यहां आना ही बेकार है।'

मैं उस सेवक को राजी नहीं कर पाया। मैं सात नम्बर क्लॉकरुम की ओर गया जो बहुत दूर है तथा उसके लिये मुझे सैकड़ों सीढ़ियां चढ़नी पड़ी। क्लॉकरुम के दरवाजे पर पहुंचते ही मुझे ध्यान आया कि मां का दिया हुआ प्रसाद का थैला तो मैं नीचे वाले क्लॉकरुम में ही भूल आया हूं। मैं पुनः दौड़ा पर मुझे उस स्थान पर थैला रखा हुआ नहीं मिला। मेरा दिमाग खराब सा हो गया। मेरे मन में आया,

'मां के भक्त के प्रति पैदा हुये अविश्वास का ही शायद मां मुझे दंड दे रही है।'

अब मैंने क्लॉकरुम का रास्ता छोड़ा और उसी सरस्वती भवन में साधुओं के पास लौटा जहां अभी भी मेरे लिये एक तख्ता खाली था।

मैंने आते ही कहा,

'महाराज क्या आप के पास साबुन है। मेरे प्रेशर बन रहा है।'

साधु महाराज ने मुझे टॉयलेट का रास्ता बताया जो मैं पहले ही देख आया था और कहा कि साबुन वहीं रखा है। मैंने अपनी पेंट शर्ट खोलकर बैग में ठूंसी और वह बैग अनजान साधु बाबा को दे दिया। मेरे बैग में सात हजार रु. तथा मोबाइल था। अपने काम से निवृत होकर आते ही बाबा ने बैग मुझे लौटाते हुये कहा,

'संभाल लेना हमने ऐसे के ऐसे रखा हुआ है।'

बाबा मेरे चेहरे में छुपे भय को शायद ताड़ गये थे।

मैं कपड़े पहन लेट गया पर बहुत देर तक मुझे नींद नहीं आई।' साढ़े नौ बजे मेरे पास सोये साधु भक्त से मैंने कहा,

'दर्शन करने चलोगे क्या, मेरे पास दो लोगों का टोकन है।'

भक्त तुरंत तैयार हो गया। मैंने अपना बैग मोबाइल समेत उसके साथी को संभलाया और हम कतार के साथ–साथ पीछे की ओर चलते गये। टोकन चैकिंग नाके तक लाइन चली गई है। चूंकि मेरा प्रसाद गुम गया था अतः मैंने यहां खुल रही श्राइनबोर्ड की एकमात्र दुकान से बहुत भीड़ में घुस एक प्रसाद का थैला खरीदा। मेरा साथी भी अनुभवी था, हम दोनों सलाह कर पंक्ति में बहुत आगे घुसपैठ कर गये। दर्शन चालू थे और हम बमुश्किल बीस मिनट में माता के दरबार में गुफा के अंदर पहुंच गये। कुछ सैकण्डों के दर्शन के बाद यहां से तुरंत ही हमें वापस धकेल दिया गया। हलुआ प्रसाद, खजाने का चवन्नी आकार का सिक्का तथा दाने के प्रसाद की थैली ले हम श्राइनबोर्ड की व्यवस्थाओं से मुक्त हुये। मैंने अपने साथी से कहा,

'आओ भगवान शिव के दर्शन कर आयें।'

साथी को बड़ा अचरज हुआ।

'हम यहां तीसरी बार आ रहे हैं। अभी तक किसी ने बताया ही नहीं कि यहां शिवजी के दर्शन भी हैं। हम बहुत सारी सीढ़ियां उतर शिव गुफा पहुंचे। वहां भी लम्बी कतार लगी थी। व्यवस्थित रास्ता न होने से यहां भक्तो को आने–जाने में बहुत समय लग रहा था। वापसी में मैं श्राइनबोर्ड के सभी कार्यालयों एवं काउंटर पर मेरी मां के खोये हुये बैग की पूछताछ करता रहा पर बैग का कोई सुराग नहीं मिला। मुझे लगा मेरा ध्यान मां की भक्ति की अपेक्षा मां के बैग में ज्यादा है।

आसमान पर बादल छाये हैं पर बरसात नहीं है। गर्म कपड़े नहीं होते हुये भी सर्दी नहीं लग रही। इतना घूमने के बावजूद माताजी के प्रताप से मुझे बिल्कुल थकान नहीं थी। दर्शन कर पाटे पर लौटे। साथी बाबा ने अपने साथियों से मेरी बहुत तारीफ की। मुझे सुबह तक यहीं सोने का अनुरोध किया गया पर मैं नहीं रुक सकता। मैंने उन लोगों को सुबह शिव गुफा के दर्शन करके ही वापस लौटने का सुझाव दिया। पांच मिनट के भीतर सरस्वती भवन छोड़ मैं वापसी यात्रा पर रवाना हो गया। भैरों बाबा के मार्ग पर आने पर मेरा मन बहुत भटका। मैंने अपने साथियों से मोबाइल पर संपर्क करना चाहा पर बात नहीं हो पाई। भैरोघाटी जाने पर मेरी रात यहीं पूरी हो जायेगी और सब साथीगण चिंता करेंगे। मेरा मन कमजोर पड़ गया और मैंने भी भैरोबाबा के दर्शन छोड़ दिये। मुझे बिल्कुल थकान नहीं है। मैं पैदल बहुत तेजी से चल रहा हूं। मेरा सोच है कि मैं पैदल ही घोड़े की अपेक्षा कम समय में नीचे पहुंच जाऊंगा। सांझी छत के बाद बरसात आई तो मैंने बैग में से निकालकर मेरा रैनसूट पहन लिया। यहां कुछ रुक घाटी में पसरी रात की निस्तब्धता देखी। अर्द्धकुंवारी के बाद मेरी बंटी से बात हुई। 'कलावती बुआजी एवं आशा चाचीजी पैदल ही आ रहे हैं वे अभी तक नहीं पहुंचे। बाकी सब घोड़ों पर बैठ गये थे और अभी होटल में सो रहे हैं।'

मेरा आगे का रास्ता थकान एवं चिंता में कटा। बारिश भी तेज हो गई। रास्ते भर बुआजी एवं चाचीजी को देखता आया। ग्यारह बजे करीब दुबारा फोन किया तब भी महिलायें होटल नहीं पहुंची थी। मैने बंटी से कहा,

'उन्हें ढूंढो न? आपके दो साथी वे भी महिलायें अभी तक नहीं लौटी हैं और आपको नींद आ रही है।'

मैं पूरे रास्ते तनाव में रहा। बाणगंगा पार करने के बाद मुझे समाचार मिला कि वे पहुंच गई हैं तब मुझे तसल्ली हुई। रात में ऑटो मिलने में बड़ी तकलीफ हुई। दूसरे परिवार के साथ सेट होकर आया और अपने हिस्से के दस रु. दिये। चौराहा से पैदल चल कर डेढ़ बजे होटल में प्रवेश किया। बिल्कुल सुनसान और धुप्प अंधेरा। मैं अंदाज से ही धड़ाधड़ सीढ़ियां चढ़ गया। कोई नहीं जाग रहा था। किसी ने मुझे न तो देखा ओर न ही टोका। वाह रे! यहां की सुरक्षा व्यवस्था। आवाज लगाकर पत्नी से कमरा खुलवाया और बिस्तर पर पड़ते ही नींद आ गई।

शिवखेड़ा

दिनांक 28–7–2006 बुधवार सुबह मुझे देर तक नहीं सोने दिया गया। मौसम साफ है। यहां कटरा में रात को भी बरसात नहीं थी जब मैं रास्ते में भीग रहा था। हमारे कपड़े सूख गये हैं और हमने बहुत सारे कपड़े इस्त्री कराने के लिये होटल वाले को दे दिये हैं। हमारे वापसी टिकट जम्मू से 31 तारीख के हैं। हमारे पास अभी पूरे तीन दिन हैं। हम इनका सदुपयोग कर कहीं घूमने निकलना चाह रहे हैं। हमने एक ट्रेवल एजेन्ट की दुकान पर पहुंच तीन दिन के लिये 11 सीटर टैक्सी सात हजार रु. में की है। जो हमें शिवखेड़ा, धर्मशाला नगर तथा चार देवियां (ज्वालादेवी, चिन्तपूर्णी, अन्नपूर्णा, नैनादेवी) दर्शन कराकर जम्मू या पठानकोट छोड़ेगी। हमने तुरंत निखिल हॉटल लौट आज की यात्रा के हिसाब से थोड़ा सा सामान दो बैगों में जमाया। रात तो वापस यहीं आकर सोना है। बस समय पर आ गई और हम रव. ाना हुये। सब को भूख लगी थी। कचोरी जलेबी की दुकान देखते ही बस रोककर बहुत सारा सामान खरीद लिया। बस में बैठ कर वे घटिया कचौरी जलेबी निगली। टूटी सड़क, घुमावदार पहाड़ी रास्तों पर सबकी तबियत बिगड़ी और हम सबके सहारे, सबसे जवान, अंशुल ने तो बहुत उल्टियां की। ऐसे में बस स्टॉफ का असहयोग व बदतमीजी बहुत अखरी। रास्ते में ही तय कर लिया कि अब इस बस में सफर नहीं करना है। रास्ते में बस स्टाफ ने एक छोटे गांव में नाश्ते की दुकान पर बस रोकी, हमने भी कुछ लिया। यहां चाय नाश्ता अच्छा मिला। हम दो बजे शिवखेड़ा पहुंचे। बस चालक ने एक होटल के पास गाड़ी रोक कर खाना बुक कराने के लिये कहा। हम बस स्टॉफ से चिढ़ गये थे। हमने इसे भी कमीशनबाजी का चक्कर माना और खाना बुक नहीं कराया। जलधारा के पास बस रोककर ड्राइवर ने हमें

आगे पैदल जाने का रास्ता बता दिया और यह भी कह दिया कि पांच बजे से पहले ही आ जाना। बाद में यहां से गाड़ियां नहीं जाने दी जाती।

नीचे उतर, पुल पार करते ही घोड़ेवालों तथा गाइड्स ने हमें घेर लिया। यहां शिवगंगा नदी पर एक घाट बना हुआ है। तेज धूप में कई लोग स्नान कर रहे हैं। हमारे पास भी स्नान हेतु कपड़े है पर गर्मी और समय की कमी के कारण नहाने पर सहमति नहीं बन पाई। हमने एक गाइड सवा सौ रु. में साथ ले लिया। यहां पुनः मां व पत्नी के दिमाग में भगवान ने फितूर पैदा कर दिया। दोनों ने हमारे साथ जाने से मना कर दिया। पत्नी को दर्शन नहीं करने हैं और मां शायद उसे अकेली नहीं छोड़ना चाहती। पहाड़ों में घूमने व वहां का सौन्दर्य देखने में महिलाओं की रुचि कम ही लगी। यहां पास ही दुकानें एवं छायादार चबूतरा है, चार घंटे आराम से गुजर जायेंगें। कुछ मनावन के बाद भी दोनों नहीं मानी तो हमने उन्हें छोड़ दिया। पैदल चलने का सबमें हौसला था अतः दौड़ पड़े। जल्दी ही गर्मी और चढ़ाई वाले रास्ते से सबकी हालत खस्ता हो गई। यहां भी वैष्णव देवी की तर्ज पर श्राइनबोर्ड बना कर विकास कार्य करवाये जा रहे हैं। शिवगंगा के साथ साथ रास्ता आगे बढ़ता है। पूरे रास्ते में टाइल्स लगवाई जा चुकी हैं। रास्ते में आगे खड़ी चढ़ाई भी आई और हमें घोड़े याद आते रहे। कठिन यात्रा के बाद खूबसूरत वादियों में बनी आश्चर्यजनक गुफा को देखकर सबकी थकान दूर हो गई। गुफा के अंदर लगातार पानी टपकने से कई आकृतियां उभर आई है। हमारे गाइड ने सारे हिन्दु देवी देवता, नदियां, पहाड़, रामायण महाभारत, धर्म प्रतीक चिन्ह उन आकृतियों में बता दिये। यहां गुफा का पुराना खतरनाक रास्ता भी है। अब बोर्ड ने सुगम नया रास्ता बनवाया है। श्राइन बोर्ड ने यहां लंगर लगा रखा है हमने यहां नीबू शिकंजी ग्रहण की। पंद्रह मिनट हमें बारिश आने के कारण यहां लंगर के लिये बने छपरे में रुकना पड़ा। वापसी में मौसम ठंडा हो गया और उतार था ही तुरंत ही पहुंच गये। ठीक पौने पांच बजे हम होटल पर बैठी मां व मेरी पत्नि से आ मिले। होटल से लेकर हमने नमकीन व मिठाई का नाश्ता किया। व्रत की समस्या यहां भी आ गई। बिना प्याज लहसुन की दाल वाला ढाबा ढूंढकर मां व बुआ कलावती को रोटियां खिलाई। दोनों ब्यालू भी करती हैं। यहां वस्त्रों पर कशीदा आदि का काम होता है। साड़ी सलवार सूट आदि के भावताव किये गये। सायं पौने छः बजे बस में बैठ रात नौ बजे होटल जम्मू निखिल पैलेस के सामने उतरे। जगदीशजी रात ही बाकी बुकिंग ट्रेवल एजेन्ट के पास जाकर रद्ध करवा आये। ट्रेवल एजेन्ट ने हमें दूसरे दिन और पांच सौ रु. काटकर सात सौ रु. मात्र तीन चक्कर लगाने के बाद वापस किये।

हम सिर्फ चार जनों को ही खाना खाने की इच्छा थी–तीन महिलायें और मैं। होटल में दो मंजिल चढ़कर कौन वापस उतरेगा, हम नीचे ही पास के चालू ढाबे में खाना खाने बैठ गये। यहां मजदूर वर्ग तथा ड्राइवर लोग ही खाना खा रहे थे। खाना बहुत सस्ता व सुस्वादु था पर सलाद अचार, पापड़, दही, अतिरिक्त प्लेट आदि कुछ नहीं दी गई। व्यवहार भी घटिया लगा। सब थके हुये थे ही होटल में जाकर सो गये।

जम्मू दर्शन

दिनांक 29–7–2006 शनिवार देरी से सो कर उठे। अब कहीं घूमने नहीं जाना है। सब थके हुये हैं और बस का सफर बीमार कर रहा है। हमारा होटल बारह बजे तक है बाद में जम्मू निकल जायेंगें। हमने एक मालिशिया बुलाकर चार जनों ने सौ रु. में मालिश करवाई। बारह बजे से पूर्व हम बाजार जाकर खाना खा आये। यहां से जम्मू के लिये गाड़ी बहुत मुश्किल से मिली तथा पैसे भी बहुत लगे। तीन बजे हम 11 सीटर गाड़ी से जम्मू के विवेकानंद चौक पर उतरे। जगदीशजी व मैंने जाकर पास के ही हॉटल में पांच कमरे 1000 रु. प्रतिदिन में बुक किये। यह होटल हिन्दु संगठन के अध्यक्ष का है जिनका नाम आतंकवादियों की हिट लिस्ट में है। यहां हमेशा पांच पुलिस गार्ड लगी रहती है। थोड़ी देर कमरों में आराम करने के बाद हम जम्मू घूमने निकल गये। थोड़ा चलते ही रघुनाथ मंदिर आ गया। अग्रवाल ध र्मशाला अभी हम पीछे छोड़ आये हैं। विभिन्न सजी दुकानें देख महिलायें खरीददारी में जुट गई।

रघुनाथ मंदिर खुलते ही जामा तलाशी, सामान व जूते जमा कराने की प्रक्रिया के बाद हम मंदिर में घुसे। यहां दर्शनोपरांत आरती भी देखने का अवसर मिला। हम मंदिर से लौटे तो पत्नी गुस्से में भरी बैठी थी।

'इतनी देर लगा दी। मुझे यहां बैठने ही नहीं दे रहे। कितनी बार इधर से उधर हो गई हूं।'

हम हॉटल लौटे पर पत्नी का गुस्सा शांत नहीं हुआ। मैं बहुत तनाव में आ गया।

दिनांक 30–7–2006 रविवार हम जल्दी उठ नहा धो कर मंगला आरती करने रघुनाथ मंदिर चले गये। आरती से आठ बजे लौट हमने जम्मू भ्रमण का कार्यक्रम बनाया। होटलवालों के मार्फत् ही एक 25 सीटर टैम्पों दिन भर जम्मू घुमाने के लिये सात सौ रु. में की। इसी बीच हम एक बार पुनः रघुनाथ मंदिर के पास जाकर वहां स्थित अमृतसरियां दी हट्टी नामक दुकान में जाकर नाश्ता कर आये। जाते समय हम अग्रवाल धर्मशाला में घुस गये थे और वहां की व्यवस्थायें देखी।

'यहां रुकने में भी कोई बुराई नहीं थी।'

जानकी लालजी ने विचार प्रकट किये।

'पर यहां कमरे नहीं हैं, हम इस तरह सामानों के फैलाकर कहीं आ जा नहीं सकते थे।' मैंने कहा।

धर्मशाला में अमरनाथ यात्रियों के लिये लंगर चलता है। हमने वहां खड़े अग्रवाल समाज के लोगों से परिचय कर लिया। उन्होंने हमें रात का भोजन करने का आमंत्रण दिया जिसे हमने स्वीकार कर लिया।

होटल के सामने मिनी बस आ खड़ी हुई और हम सब मेरी पत्नी को मनाने में जुट गये। सारे ही साथियों ने मिल बड़ी मशक्कत के बाद उसे घूमने चलने के लिये राजी किया। हम साढ़े ग्यारह बजे होटल छोड़ सके। जम्मु के रिक्शेवालों द्वारा तय पर्यटक स्थल, जाम्बवंत गुफा का शिव मंदिर, बाहुफोर्ट स्थित माताजी का मंदिर तथा बाग ए बाहु, महाराजा का महल, नव दुर्गा मंदिर, कांच का मंदिर, रणबीरेश्वर शिव मंदिर देखकर पांच बजे लौटे। गर्म ठंडे पानी का चश्मा बात करने के बाद भी मिनी बस वाले ने हमें नहीं दिखाया। पूर्व के वर्षों में ऑटो वालों के साथ घूमने गया था पर आज तक किसी ने गर्म पानी के चश्में को नहीं दिखाया। बस बहाना लगा देते हैं अभी बंद है। भ्रमण से आने के बाद एक घंटा आराम करने के बाद भोजन करने निकले। कई लोगों ने अग्रवाल धर्मशाला में भोजन किया। जगदीशजी खंडेलवाल ने आज भी बहुत महंगे वातानूकूलित होटल श्री रामाकृष्णा में भोजन लिया। वापसी में प्रसाद, अखरोट, बादाम आदि की खरीद की गई।

31–7–2006 सोमवार–हमारी रात आराम से गुजरी। प्रातः रघुनाथ मंदिर दर्शन किये व अमृतसरियां दी हट्टी पर नाश्ता किया। दस बजे मिनी बस वाला होटल के सामने ही आ गया। उससे रात ही बात हो गई थी। वह हम 11 सवारियों को 100 रु. में रेल्वे स्टेशन छोड़ गया। स्वयं सामान उठाकर भारी गर्मी के बीच एस. 2 कोच में हमारी 33 से 38 नम्बर की सीटों पर बैठे। हम 1–8–2006 मंगलवार प्रातः पौने पांच बजे कोटा रेल्वे प्लेटफार्म पर उतरे तो वहां हमारे स्वागत में जानकीलालजी के परिजन फूलमालायें लेकर खड़े थे। थोड़ी देर बाद ही कुंवर सा. महेन्द्रजी व बहिन शकुन्तला भी मालायें, चाय तथा नाश्ता लेकर पहुंच गये। आठ बजे हम प्लेटफार्म नम्बर तीन से बारां की गाड़ी में बैठे और पौने दस बजे बारां स्टेशन पर उतरे। आश्चर्य यहां भी हमारे परिजन हमारे स्वागत में फूलमालायें एवं लड्डू लेकर तैयार खड़े थे। यहां आई कार एवं मोटर साइकिलों से हम घर पहुंचे। यात्रा पूरी हो गई पर मुझे मां की अमरनाथ यात्रा न हो पाने का मलाल रह गया। संकल्प लिया हैं आगामी वर्ष में मां को अमरनाथ यात्रा करवाने का, देखें ईश्वर क्या करता है?